Vol. 8, Issue -2 (July 2019) pp. 14-19 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

भारतीय शास्त्रीय नृत्यकला के पुरोधा –बिसानों रामगोपाल

रंजना उपाध्याय
सहायक आचार्या (कथक)
बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
Email: ranjana0145@gmail.com

सारांश

1930 के दशक में पश्चिमी देशों में भारतीय शास्त्रीय नृत्यकला का प्रचार–प्रसार करने वाले अग्रणी व्यक्तियों में बिसानों रामगोपाल का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। यद्यपि रामगोपाल से पूर्व रूथ सेट डेनिस, टेड़ स्वान, अन्ना पावलोवा तथा ला मेरी आदि यूरोपीय तथा अमेरिकी कलाविद् भारत की सुदृढ़ नृत्य परम्परा का दिग्दर्शन पश्चिमी देशों को करा चुके थे तथा पं. उदयशंकर द्वारा भारतीय नृत्यकला का व्यापक प्रचार–प्रसार पश्चिमी देशों में हो रहा था तथापि भारतीय शास्त्रीय नृत्य रूपों (कथकली, भरतनाट्यम तथा कथक) के मूल स्वरूप से पश्चिमी कला जगत को पश्चिमी करने वाले प्रथम व्यक्ति रामगोपाल ही थे। शास्त्रीय नृत्य शैलीयों पर आधारित लघु–नृत्य रूपों तथा नृत्यनाटिकाओं की रचना पर रामगोपाल ने पश्चिमी देशों में भारतीय नृत्यरूपों को प्रतिष्ठित करने में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया।

मुख्य शब्द – शास्त्रीय नृत्य, रामगोपाल, इम्प्रैसारियो, पश्चिमी देश।

रामगोपाल भारत के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शास्त्रीय नर्तक थे। बिसानों रामगोपाल का जन्म 20 नवम्बर 1912 को बर्मी माता तथा राजपूत पिता के घर हुआ था। रामगोपाल के सम्बन्ध में यह कहना उचित होगा कि वे जन्मजात नर्तक थे, उनके सुगठित शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व में भारतीय शास्त्रीय नृत्य पूर्णतः अपने वैभव के साथ प्रतिष्ठित था। रामगोपाल सौभाग्यशाली थे कि नृत्य के क्षेत्र में उन्हें मैसूर के युवराज का संरक्षण प्राप्त हुआ। उन्होंने भरतनाट्यम्, कथकली तथा कथक का विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त किया। रामगोपाल ने भरतनाट्यम की शिक्षा गुरु मीनाक्षीसुन्दरम पिल्लै व गुरु मुथुकुमार पिल्लै से प्राप्त की तथा

रामगोपाल (द लीजेण्ड ऑफ़ ताजमहल)

कथकली की शिक्षा गुरु कुंज कुरूप तथा वल्लथोल नारायण मेनन से प्राप्त की तथा कथक, गुरु जयलाल व सोहनलाल से सीखा। रामगोपाल ने अपने नृत्य के सम्बन्ध में स्वयं यह स्वीकार भी किया है कि ''मेरा बायां भाग भरतनाट्यम, दायाँ भाग कथकली है तथा मेरे पैरों में कथक वास कर रहा है।[1]

रामगोपाल ने पश्चिमी देशों में अपनी नृत्य–यात्रा का प्रारम्भ सन् 1936 में अमेरिकन एथेनिक नर्तकी 'ला मेरी' के साथ प्रारंभ किया, जो रामगोपाल की नृत्य सहयोगी बनी, रामगोपाल ने ला मेरी के साथ जेनांग, कुआलालम्पुर, सिंगापुर तथा जापान की सफल नृत्य–यात्रा की। इसके पूर्व 1935 में रामगोपाल ने भारत में शास्त्रीय शैलियों पर आधारित अनेक एकल सफल प्रदर्शन किये। सन् 1930–40 के दशक में रामगोपाल ने अनेक नृत्य संरचनाओं का निर्माण किया जो पूर्णतः भारतीय शास्त्रीय नृत्यों पर आधारित थी, उन्होंने 'ट्रैवलिंग डांस कम्पनी' (Travelling Dance Company) का निर्माण किया, जो यूरोप जैसे देश के लिये नवीन थी।

उदयशंकर तथा तारा चौधरी

उस समय की महिला नर्तकियों तारा चौधरी, शेवन्ती, मृणालिनी, साराबाई, रत्ना, मोहिनी, ब्रेसन, एम0के0 सरोजा तथा बाद में कथक नर्तकी कुमुदिनी लाखिया के साथ संगठित होने वाले प्रथम व्यक्ति रामगोपाल ही थे।[2] यद्यपि रामगोपाल ने नृत्य के क्षेत्र में तत्कालीन सर्वाधिक चर्चित व्यक्ति उदयशंकर को ही अपनी प्रेरणा स्वीकार किया।

सन् 1938 में उन्होंने न्यूयार्क में अपना प्रथम एकल प्रदर्शन किया। 1939 में वे कथक गुरु सोहन लाल के साथ प्रदर्शन के लिये न्यूयार्क गये। इसी वर्ष उन्होंने लन्दन के एल्डविच थियेटर (Aldwych Theatre) में भी अपना प्रथम प्रदर्शन किया। इन्हीं सफल प्रदर्शनों के साथ उनकी मित्रता अनेक प्रसिद्ध बैले नर्तकियों के साथ हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वे भारत लौटे, पॉलिश समालोचक टेडियस ज़ेलिंस्की (Tadeus Zelinski) ने उन्हें 'भारत के निन्जास्की' कहा वहीं सेसिल बी डे मिले (Cecil B. De Mille) ने उनका परिचय प्रसिद्ध इम्प्रेसारियो सॉल ह्यूरॉक (Sol Hurok) से कराया। अपने कलात्मक शारीरिक सौष्ठव व नृत्य प्रदर्शन के कारण रामगोपाल पश्चिमी देशों में भारतीय शास्त्रीय नृत्य के अग्रणी बने। रामगोपाल की प्रसिद्धि का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने सम्पूर्ण विश्व के सर्वाधिक प्रसिद्ध रंगमंचों (थियेटरों) पर अपनी नृत्य प्रस्तुति दी, जिनमें बर्सोवा (Warsaw) में 'द ग्रांड थियेटर', 'ऑपेरा हाउस',

[1] https://epgp.inflibnet.ac.in paper 4, module 34, Pg no. 5

[2] Some Dancers of India - Susheela Mishra, Pg. No. 67

पोलैण्ड (जहाँ पावलोआ व निन्जास्की ने अपनी नृत्य प्रस्तुति दी थी। 'द लौवर पैलेस' (The Palais du Louvre) तथा 'म्यूज़ियम गुमैर' Musee Guime, Paris, 'एल्डविच थियेटर' (The Aldwych Theatre, London), 'द टाउन हॉल' (The Town Hall, Stockholm) जहाँ पर नॉवेल पुरस्कार समारोह का अयोजन हुआ था, प्रमुख है।[3]

रामगोपाल तथा कुमुदिनी लखिया

रामगोंपाल के जीवनवृत्त पर आधारित दो चलचित्रों का भी निर्माण हुआ, प्रसिद्ध फ्रेंच फिल्म निर्माता 'लैमोरिस' (Lamorisse) की 'ओम शिवा' तथा 'राम'। सन् 1998 में भारत में आशीष मोहन खोकर ने रामगोपाल पर एक डिजिटल फिल्म का निर्माण किया।[4]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 60 के दशक में रामगोपाल इंग्लैण्ड में स्थायी रूप से बस गये। 80 के दशक तक वे भारतीय शास्त्रीय नृत्य रूपों को पश्चिम में लोकप्रिय बना चुके थे। उन्होंने सन् 1951 में 'इण्डियन डांसिंग' तथा 1957 में अपनी आत्मकथा रिदम्स इन द हैवन्स (Rhythms in the Heavens) को प्रकाशित किया।[5]

अल्प समय के लिये उन्होंने सन् 1940 में लन्दन जाने से पूर्व बैंगलोर में व 1960 में लन्दन में एकेडमी ऑफ इण्डियन डांस एण्ड म्यूज़िक (Academy of Indian Dance and Music) नामक दो नृत्य संस्थानों को प्रारम्भ किया। उनके गहन शास्त्रीय नृत्य–नैपुण्य तथा प्रस्तुतिकरण को सफल बनाने की तकनीकी योग्यता तथा यूरोपीय दर्शकों के लिये अपेक्षाकृत अधिक ग्राह्य शास्त्रीय नृत्यों के प्रस्तुतिकरण ने उन्हें शीघ्र ही सम्पूर्ण यूरोप में ख्यातिलब्ध भारतीय नर्तक बना दिया। उनके प्रस्तुतिकरण की एक विशेषता यह भी थी कि वे प्रत्येक प्रस्तुति के पूर्व प्रस्तुति से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करने के बाद ही प्रस्तुति प्रारम्भ करते थे।

रामगोपाल के नृत्य–समूह में शेवन्ती, मेनका, रत्ना, मोहनी, मृणालिनी साराभाई, एम0के0 सरोजा के अतिरिक्त पुरुष नर्तकों में योगेन्द्र देसाई, रमण–लाई (कथक नर्तक), सुरेन्द्र (मणिपुरी), कृष्णा नम्बुथरि (कथकली) जैसे प्रतिभाशाली कलाकार थे। उनकी संरचनाओं में संगीत–निर्देशन नटराजन तथा

[3] https://epgp.inflibnet.ac.in paper -4, module 34, Pg no. 6

[4] Ibid, Pg no. 7

[5] https://epgp.inflibnet.ac.in paper -4, module 12, Pg no. 7

Vol. 8, Issue -2 (July 2019) pp. 14-19 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

रजनी–लखिया जैसे योग्य कलाकारों ने दिया।[6] प्रसिद्ध समालोचक मोहन खोकर ने 6 मार्च 1969 को प्रकाशित हिन्दुस्तान टाइम्स में रामगोपाल के लिये लिखा–''रामगोपाल ने यूरोप में भारतीय शास्त्रीय नर्तकों के लिये प्रस्तुति देना तथा प्रसिद्धि पाने को आसान बना दिया था।''[7] यद्यपि इससे पूर्व उदयशंकर ने पश्चिम में अपनी सशक्त पहचान बना ली थी, परन्तु इन दोनों नर्तकों की शैली में पर्याप्त अन्तर था, जहाँ एक ओर उदयशंकर नृत्य की उस शैली तथा तकनीक के सर्जक व प्रचारक थे, जिसे आज 'मार्डन डांस' (Modern Dance) के नाम से जाना जाता है। वहीं रामगोपाल संभवतः वह प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने नृत्य की शास्त्रीय शैलियों कथक, भरतनाट्यम व कथकली की न केवल विधिवत शिक्षा ली, बल्कि अपनी नृत्य–संरचनाओं तथा एकल नृत्य में विशुद्ध रूप से इन भारतीय नृत्य शैलियों का प्रयोग भी किया। कलात्मक वेशभूषा आकर्षक संगीत–संयोजन तथा पौराणिक विषयवस्तु की सहायता से शास्त्रीय नृत्य के मूल–स्वरूप को पश्चिमी देशों में सर्वाधिक लोकप्रिय बनाने का श्रेय निःसन्देह रामगोपाल को जाता है।

एडिनबर्ग फेस्टिवल में रामगोपाल ने कथक शैली में रचित नृत्य–नाटिका 'द लीजेंड ऑफ ताजमहल' (The Legend of Taj Mahal) का प्रदर्शन किया, जिसमें मुमताज महल के चरित्र को कुमुदिनी लखिया जी ने निभाया था। इसके अतिरिक्त 'द राजपूत सेरेनेड ऑफ लव' (The Rajput Serenade of Love) नृत्य–नाटिका को भी रामगोपाल ने कथक शैली में निर्मित किया। कुमुदिनी लखिया जो कि प्रसिद्ध कथक नर्तकी व नृत्य–रचनाकार हैं, ने लम्बे समय तक रामगोपाल के समूह में कथक प्रदर्शन किये।

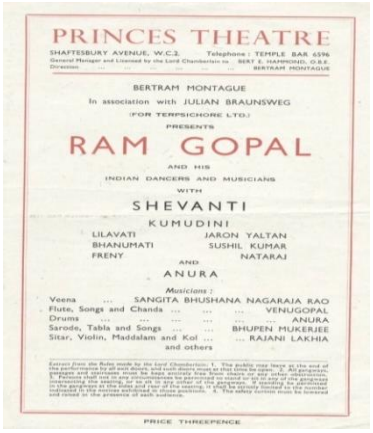

PRINCES THEATRE
SHAFTESBURY AVENUE, W.C.2. Telephone: TEMPLE BAR 6596
General Manager and Licensed by the Lord Chamberlain to ... BERT E. HAMMOND, O.B.E.
Direction ... BERTRAM MONTAGUE

BERTRAM MONTAGUE
In association with JULIAN BRAUNSWEG
(FOR TERPSICHORE LTD.)
PRESENTS
RAM GOPAL
AND HIS
INDIAN DANCERS AND MUSICIANS
WITH
SHEVANTI
KUMUDINI
LILAVATI JARON YALTAN
BHANUMATI SUSHIL KUMAR
FRENY NATARAJ
AND
ANURA

Musicians:
Veena ... SANGITA BHUSHANA NAGARAJA RAO
Flute, Songs and Chanda ... VENUGOPAL
Drums ... ANURA
Sarode, Tabla and Songs ... BHUPEN MUKERJEE
Sitar, Violin, Maddalam and Kol ... RAJANI LAKHIA
and others

PRICE THREEPENCE

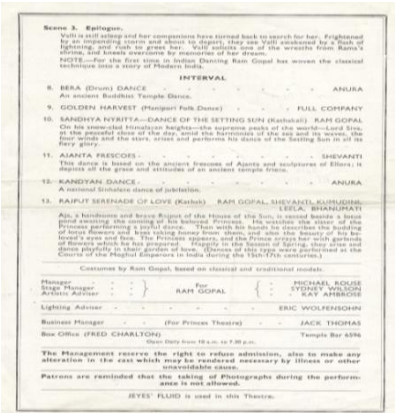

Scene 3. Epilogue.
Valli is still asleep and her companions have turned back to search for her. Frightened by an impending storm and about to depart, they see Valli awakened by a flash of lightning, and rush to greet her. Valli solicits one of the wreaths from Rama's shrine, and kneels overcome by memories of her dream.
NOTE.—For the first time in Indian Dancing Ram Gopal has woven the classical technique into a story of Modern India.

INTERVAL

8. BERA (Drum) DANCE ... ANURA
An ancient Buddhist Temple Dance.
9. GOLDEN HARVEST (Manipuri Folk Dance) ... FULL COMPANY
10. SANDHYA NYRITTA—DANCE OF THE SETTING SUN (Kathakali) RAM GOPAL
On his snow-clad Himalayan heights—the supreme peaks of the world—Lord Siva, at the peaceful close of the day, amid the harmonies of the sea and its waves, the four winds and the stars, arises and performs his dance of the Setting Sun in all its fiery glory.
11. AJANTA FRESCOES ... SHEVANTI
This dance is based on the ancient frescoes of Ajanta and sculptures of Ellora; it depicts all the grace and attitudes of an ancient temple frieze.
12. KANDYAN DANCE ... ANURA
A national Sinhalese dance of jubilation.
13. RAJPUT SERENADE OF LOVE (Kathak) RAM GOPAL, SHEVANTI, KUMUDINI, LEELA, BHANUMATI
Ajit, a handsome and brave Rajput of the House of the Sun, is seated beside a lotus pond awaiting the coming of his beloved Princess. He watches the sister of the Princess performing a joyful dance. Then with his hands he describes the budding of lotus flowers and bees taking honey from them, and also the beauty of his beloved's eyes and face. The Princess appears, and the Prince arrays her with garlands of flowers which he has prepared. Happily in the Season of Spring, they arise and dance playfully in their garden of love. (Dances of this type were performed at the Courts of the Moghul Emperors in India during the 15th-17th centuries.)

Costumes by Ram Gopal, based on classical and traditional models.

Manager / Stage Manager / Artistic Adviser — For RAM GOPAL — MICHAEL ROUSE / SYDNEY WILSON / KAY AMBROSE
Lighting Adviser ... ERIC WOLFENSOHN
Business Manager (For Princes Theatre) ... JACK THOMAS
Box Office (FRED CHARLTON) Temple Bar 6596
Open Daily from 10 a.m. to 7.30 p.m.

The Management reserve the right to refuse admission, also to make any alteration in the cast which may be rendered necessary by illness or other unavoidable cause.

Patrons are reminded that the taking of Photographs during the performance is not allowed.

JEYES' FLUID is used in this Theatre.

रामगोपाल (The Rajpur Serenade of Love, Princes Theatre, London, Brochure)

---

6 Ibid

7 https://epgp.inflibnet.ac.in paper -7, module 26, Pg no. 11

पश्चिम के अनेक प्रसिद्ध इम्प्रेसियारो (आयोजक), जिनमें पोलिश समालोचक मिस्टर अलेक्जेण्डर जुण्टा (Mr. Alaxander Junta), सिसेल बी0डी0 मिले (Cecille B.De Mille), जूलियन ब्रान्सवे (Julian-Braunswey) तथा सॉल ह्यूरॉक (Sol Hurok) प्रमुख है, ने रामगोपाल के लिये हॉलीवुड, लॉस एंजेल्स, सैन फ्रांसिस्को, शिकागो व न्यूयार्क में सफल प्रदर्शनों को आयोजित करवाया।[8]

रामगोपाल की प्रसिद्धि का अनुमान पश्चिम के अनेक पत्र–पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों में उनकी प्रशंसा में लिखे गये लेखों से लगाया जा सकता है।

सन् 1990 में रामगोपाल को उनकी नृत्य सेवा के लिये संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड की महारानी द्वारा आर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर (Order of the British Empire) देकर रामगोपाल को नृत्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।[9]

अपने अन्तिम को रामगोपाल ने वृद्धाश्रम में व्यतीत किये। जहाँ पॉमेला कूलन (Pamela Cullen) ने उनकी देखरेख कीं। उन्होंने अपनी कुछ वेशभूषाएँ (Costume), जिनमें द ईगल डांस पीस की वेशभूषा (जो कि शुद्ध लैदर तथा सोने से निर्मित थी) भी शामिल है, को विक्टोरिया तथा एल्बर्ट म्यूज़ियम को दान स्वरूप दीं।[10]

The Eagle Dance, Aldwych Theatre, London, Brochure

निष्कर्ष –

इस प्रकार प्राप्त ज्ञान स्त्रोतों व संदर्भित सामग्री के आधार पर रामगोपाल जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि रामगोपाल संभवतः वह प्रथम शास्त्रीय नर्तक थे जिन्होंने भारतीय शास्त्रीय नृत्यकला का आधार लेकर सम्पूर्ण यूरोप तथा अमेरिकी देशों में भारतीय नृत्यकला को एक सुप्रतिष्ठित नृत्यशैली के रूप में स्थापित कर पश्चिमी देशों में भारतीय नर्तकों के लिये असीमित संभावनाओं

[8] Some Dancers of India - Susheela Mishra, Pg.No. 65

[9] https://www.theguardian.com/news/2003/oct/13/guardianobituaries.india

[10] https://epgp.inflibnet.ac.in paper -4, module 12, Pg no. 11

के द्वार खोल दिये। निःसन्देह वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की प्रतिष्ठा का सर्वाधिक श्रेय रामगोपाल जी को जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. https://epqp.inflibnet.ac.in Paper 4 module 12
2. https://epqp.inflibnet.ac.in Paper 4 module 34
3. https://epqp.inflibnet.ac.in Paper 7 module 26
4. Some dancers of india-susheela Mishra, Harman Publishing House, New Delhi
5. https://www.theguardian.com/news/2003/oct/13/guardianobituaries.india retrieved 05/01/2019
6. https://www.youtube.com/watch?v=yJmlBLRc5Yw&t=321s, interview of ramgopal .retrieved 5/01/2019
7. https://www.youtube.com/watch?v=aC32jtTVv9o ,documentary on ramgopal. retrieved 5/01/2019
8. https://www.asianage.com/life/art/211118/remembering-ram-gopal-who-put-indian-dance-on-the-world-map.html retrieved 5/01/2019
   https://www.thehindu.com/features/magazine/dance-like-a-man/article5459782.ece retrieved 8/01/2019
9. https://www.thehindu.com/life-and-style/a-book-on-the-late-indian-modernist-dancer-ram-gopal/article22435266.ece retrieved 10/01/2019
10. https://www.theguardian.com/news/2003/oct/13/guardianobituaries.india retrieved 11/01/2019
11. चित्र सं0 1 http://www.memoryprints.com/image/326700/ram-gopal retrieved 15/01/2019
12. चित्र सं0 2- https://scroll.in/article/689145/a-visual-tribute-to-ram-gopal-indias-forgotten-dance-superstar retrieved 15/01/2019
13. चित्र सं0 3- http://minai1.rssing.com/chan-8482974/all_p2.html retrieved 15/01/2019
14. चित्र सं0 4- https://www.ebay.co.uk/itm/Ram-Gopal-Indian-Dancer-London-1950s-Cecil-Beaton-Photo-Bandung-File-.JX339/132591946758?hash=item1edf188c06:g:bWEAAOSwYm5a2yi3 retrieved 15/01/2019
15. चित्र सं0 5- https://slideplayer.com/slide/13453489/ Slide no. 8 retrieved 15/01/2019